Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 GISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

मानव–जीवन एवं संत कबीर

डॉ० जया शर्मा
रीडर एवं अध्यक्ष, संगीत विभाग, आर्य कन्या पी0जी0 कालेज, हापुड़, उत्तर प्रदेश।

सारांश– विश्व बन्धुत्व की भावना को बल मिलता है तथा मानव स्वयं ही मानवता के प्रेम को अपनाने के लिए अग्रसर हुआ है निश्चित रूप से कबीर की ये साखियाँ मानव को आत्म निरीक्षण की ओर उन्मुख करती है शुद्ध आचरण के लिए सभी को बाध्य करती है। संतोष, उदारता, परोपकार सेवा आदि को अपनाने का आग्रह करती है। अच्छे कर्मों की प्रेरणा बुरे कर्मों का त्याग सच्चरित्रता, सामाजिक एकता, भगवद्भक्ति आदि का संचार करती है। इसलिए कबीर की साखियाँ वाणी के अद्भुत सौन्दर्य से ओतप्रोत हैं और इनमें कबीर को सर्वजयी व्यक्तिव विद्यमान है।

मुख्य शब्द– मानव, जीवन, संत, कबीर, सौन्दर्य, परोपकार, संतोष, उदारता।

मानव मात्र को सत्य अहिंसा एकता तथा विश्वबन्धुत्व का उपदेश देने वाले संत कबीरदास निर्गुण संत काव्य धारा के एक ऐसे साधक रहे जिन्होंने अपने युग की धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था से टकराकर अद्भुत ऊर्जा प्राप्त की, उनका सम्पूर्ण जीवन चुनौतियों से भरा रहा, उन्होंने जिधर देखा उधर ही आदमी सम्प्रदायों, जातियों आडम्बरों में जकड़ा हुआ दिखाई दिया। माया, मोह तथा भ्रम में फंसी हुई मानवता की सिसकियां संत कबीर को बेचौन कर देती थी, उन्होंने बाह्य आडम्बरों के खिलाफ डटकर मुकाबला किया तथा पंडितों की एवं मुल्ला मौलवियों की चिंता नहीं की लोकनिंदा से भयभीत न होकर अपनी वाणी को प्रबल बनाया, उन्होंने हिन्दु मुसलमान दोनों को फटकारा, मुसलमानों को फटकारते हुए उन्होंने मस्जिद के ऊपर चढ़कर अजान देने का विरोध किया,

काँकर पाथर जोरि कर मस्जिद लई बनाय।
तापर मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

अर्थात् खुदा बहरा नहीं है ईश्वर भी बहरा नहीं है। हम संकीर्तन में ढोल मजीरा बजाते हुए जोर–जोर से राम या भगवान का नाम लेते हैं। स्वर के साथ गाते भी है और बिना ताल स्वर के भी संकीर्तन करते हैं। कबीर को यह भी बुरा लगता होगा। इसलिये उन्होंने रमैनी के चालीसवें पद में लिखा है–

''पंडित वाद वदन्ते झूठा
राम कह्यां दुनिया गति पावे षांड कह्या मुख मीठा''

पंडितों केवल राम नाम कहने से सांसारिकों को गति नहीं मिल सकती। खांड का नाम मात्र लेने से ही मुख मीठा नहीं हो सकता। इस प्रकार कबीर का व्यक्तित्व अपरिमेय है, अगाध है, जिसमें वेदांत की गहराई भी है योग की ऊँचाई भी है, जिसे धर्म के सरोवर में ढूंढा नहीं जा सकता है। आध्यात्म की गंगा में डुबकी लगाते हुए ही देखा, पढ़ा व मनन किया जा सकता है।

संत कबीर की जीवनी के विषय में बहुत से मत–मतान्तर हैं। ये महात्मा श्री रामानन्द जी के शिष्य थे, इसमें कोई संदेह नहीं। महात्मा रामानन्द जी ने इन्हें कब और कैसे अपना शिष्य बनाया, इसमें भी मतभेद है। संत कबीर किसके बालक थे, किस

जाति के थे इसका भी ठीक पता नहीं है। अनुमान है कि वे स्वामी रामानन्द जी के वैसे ही शिष्य बने होंगे, जैसे एकलव्य गुरु द्रोणाचार्य का शिष्य बना था। कहते हैं कि रात्रि के अंतिम प्रहर में स्वामी रामानन्द जी स्नान करने गंगा जी जा रहे थे और कबीर गंगा के किनारे सीढ़ी पर लेटे रहे। अचानक स्वामी जी का पाँव एक मानव पर पड़ गया और उनके मुख से सीताराम निकल पड़ा। बस, कबीर को इतने से ही प्रयोजन था। चाहे बात में जितना भी वाद–विवाद छिड़ा होगा, किन्तु कबीर तो अपना गुरू पा ही गए थे। वे डंके की चोट पर कहते हैं–

सतगुरू के परताप से मेट गयो दुख द्वन्द।

की कबीर दुविधा मिटी गुरू मिलिया रामानन्द।।

कबीरदास ने काशी को धार्मिक आडम्बर के गर्त से निकाला। व्यवसाय से बुनकर कबीर ने देखा कि दुनिया की चादर मैली हो गयी है। परमात्मा की बनायी हुई स्वच्छ और सुंदर चादर को मानव ने ओढ़कर मैली कर दी है तो वह भीनी–भीनी चादर बुनने में लीन हो गए।

रामानंद के शिष्य श्कबीरदास ने जो ज्ञान प्राप्त किया था, वह बाजार से खरीदा हुआ ज्ञान नहीं था। वह सहज ज्ञान था, ऐसा ज्ञान जो असीम साहस से भर देता है। ऐसा साहस जो दुनिया की प्रचलित नियम–नियमावली, रीति रिवाज, रूढ़ियों और परम्पराओं को अस्वीकार कर सके। इस अपूर्व साहस के साथ उन्होंने एक नई चादर बुनी यह प्रेम की चादर थी, किसी विशेष अधिकार से नहीं मिलने वाली थी।

प्रेम न बारी उपजै प्रेम न हाट विकाडू।

राजा परजा जेहि रूचौ, सीस देइ लै जाई।।

इस प्रकार संत कबीरदास जी ने प्रचलित काव्यरूपों की लोकोन्मुखी परम्परा को आत्मसात् करके अपनी अनुभूति और विचारों को सामान्य जनों में प्रचलित गीत माध्यमों से भी प्रेषित किया। उन्होंने चौदह प्रकारो के काव्य रूपों का वर्णन किया है। साखी, सबद रमैनी बाबनी, चौंतीसा, पिती, बार, बसन्त हिंडोला, चांचर, कहरा, बेलि, विरहुल, विप्रमतीसी ।

कबीरदास जी के द्वारा प्रयुक्त काव्यरूपों को देखने से ही ज्ञात होता है कि उनकी दृष्टि लोक–परम्परा की ओर थी। विभिन्न लोक काव्य रूपों का सफल और मौलिक प्रयोग कबीर को कवि ही नहीं बल्कि लोक कवि सिद्ध करता है। इस प्रकार श्कबीरदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जन साधारण को आडम्बरपूर्ण धर्म से निकाल कर सहज धर्म की ओर प्रवृत्त करने का दृढ़ संकल्प लिया उन्होंने इस संकल्प की पूर्ति के लिए निर्भयता, अक्खड़ता और दृढ़ता से सभी प्रचलित अंध–विश्वासों, पाखण्डों को अपनी रचनाओं के माध्यम से ध्वस्त किया।

कबीरदास की रचनाओं में सबसे अधिक महत्व 'साखियों' का माना जाता है। श्साखीश शब्द संस्कृत के साक्षी शब्द का अपभ्रंश रूप है और साक्षी का अर्थ होता है 'गवाही' अर्थात् जो कुछ स्वयं देखा है या अनुभव किया है उसे सच्चाई तथा ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करना ही 'साक्षी' देना कहलाता है।

जिस प्रकार एक 'साक्षी' देने वाला व्यक्ति अपनी आंखों से देखी हुई सच्ची घटना को दूसरों के सम्मुख प्रकट करता है उसी प्रकार कबीर ने भी साक्षात् अनुभव के साथ यथार्थ ज्ञान को और अपनी अनुभूतियों को साखियाँ के द्वारा जनता के सम्मुख प्रकट किया है। इन साखियों में महात्माओं के उपदेशों एवं ज्ञान ध्यान की बातों के साथ–साथ उन उलझनों को भी सुलझाने का प्रयास किया है, जो हम सभी के दैनिक जीवन में पग–पग पर आते रहते हैं तथा जिनके कारण हम भ्रम एवं संदेह में फंस जाते हैं। इस प्रकार हम देखते है कि हमें दैनिक जीवन की नैतिक आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक उलझनों को सुलझाने के लिए भ्रम एवं संदेह के निवारण के लिए त्रुटि एवं भूलों को सुधारने के लिए जिस ज्ञान को आवश्यकता पड़ती है वह सभी इन साखियों में

निहित हैं, इसलिए साखीश ज्ञान की आँख कहलाती है और इन साखियों में विद्यमान ज्ञान के बिना संसार के प्रपत्र से मुक्ति नहीं मिलती है, कहा भी गया है कि

''साखी आँखी ज्ञान की समुझि देखि मन भांति।

बिनु साखी संसार का झगरा छूटत नाहीं।।''

कबीर ने साखियों में ईश्वर के गुणगान, गुरू की महत्ता ब्राह्य आडम्बरों से मानव मात्र को संदेश आदि की चर्चा स्थान–स्थान पर की है, उन्होंने कहा कि पदों का ज्ञान करने से केवल मन को हर्ष प्राप्त होता है परन्तु साखियों के गायन से आनंद की प्राप्ति होती है।

पद गाये मन हरषिया साषी कहया आनंद

गुरु की महत्ता पर भी कबीर ने अपनी साखी में कहा है कि

गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लांगू पाय।

बलिहारी गुरू आपण गोविंद दियो बताय।।

अतः निश्चित रूप से हम यह कह सकते है कि कबीरदास को संगीत का कुछ ज्ञान तो अवश्य था इसीलिये उनके पदों की रचना पूर्णतया गेय थी। उनकी प्रबल इच्छा थी कि उनकी अनुभव सिद्ध वाणी श्रोताओं के मन में देर तक गूंजती रहे इसलिये उन्होंने अपनी वाणी को संगीत की लहर में पिरो दिया। कबीर ने साखियों के कहने के माध्यम से समाज में यह संदेश भी दिया है कि इस भवसागर से पार पाने हेतु प्राणियों को साखियां का गान या कहना अति अनुभव होता है ये साखियां वास्तव में मानव के मन के करीब ही है। संसार के बन्धनों से मुक्त करके आवागमन के चक्र से छुड़ाने वाली होती है। साथ ही कबीर दास जी ने एक विशेष बात और बताई है कि जो व्यक्ति साखी तो कहता है परन्तु उसके अनुकूल आचरण नहीं करता वह मोह रूपी नदी के जल में ही बहता रहता है तथा सदैव मोह जाल से निकल नहीं पाता।

''साखी कहै है नहीं चाल चली नहि जाय।

सलिल मोह नदिया बहै, पाँव नहीं ठहराय।।

इस तरह इन साखियों में कबीर ने प्रामाणित एवं प्रत्यक्ष अनुभव से सम्बन्धित उन विचारों को रखा है जिनके अनुकूल आचरण करने से मानव मात्र का कल्याण हो सकता है। कबीर ने अपनी साखियों का विभाजन अंगों में किया है ''गुरूदेव को अंग'', **सुमिरण कौ अंग, विरह कौ अंग, ग्यान विरह कौ अंग माया कौ अंग** आदि।

सतगुरु की कृपा से ही मनुष्य सांसारिक प्रपचों से मुक्त होकर भगवान की भक्ति में लीन होता है और जब मन हरिस्मरण में लीन हो जाता है तो उसे अवश्य मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रकार जीवन में गुरु की महत्ता नाम स्मरण की महत्ता ज्ञान प्राप्ति की महत्ता ही सर्वश्रेष्ठ होती है।

कबीर की साखियों में सूक्ष्म अनुभूतियों पर दर्शन का रंग भी देखने को मिलता है इसलिये उन्होंने छोटे–छोटे दोहों में ब्रह्म और जीव अद्वैत्ता, जगत् और ब्रह्म का अभेद, माया के द्वारा बाह्य और जीव एवं बाह्य और जगत् की भिन्नता आदि का प्रयोग बड़े ही सुंदर एवं सजीव ढंग से किया है, क्योंकि दर्शन उस आन्तरिक बेचौनी की अभिव्यक्ति है जो एक उच्च कोटि के मस्तिष्क और सशक्त कल्पना में निहित रहती है। दर्शन का प्रमुख कार्य जीवन की उच्चतम संभावनाओं का निरूपण करना है उन सम्भावनाओं का जिन्हें यथार्थ बनना सम्भव है। कबीर की इन्हीं साखियों में ईश्वर के प्रति रागात्मक संम्बंधों तथा मिलन की आन्तरिक बेचौनी की भी अभिव्यक्ति होती है। उनमें सशक्त कल्पना भी है। वे जीवन की साधारण उपलब्धियों को तिरष्कृत करके उच्चतम् संभावनाओं को ग्रहण करना चाहते हैं।

यह तो सत्य ही है कि मानवीय करूणा का बोध कविता और दर्शन दोनों को जन्म देती है। 1 उसी से बुद्ध और गाँधी बनते है और उसी से बाल्मीकि कबीर भी बनते हैं। कबीर का ज्ञान आह् से उपजा है। यह आह धर्म और जाति–पांति के नाम पर सताये हुए लोगों की आह है। कबीर की पीड़ा इस साखी में देखने को मिलती है–

सुखिया संब संसार है, खाये और सोवे।

दुखिया दास कबीर है, जागे और रोवे।।

इस प्रकार कबीर ने दार्शनिक तथ्यों को साखियों में बड़ी सरलता के साथ समझाया है।

कबीर की साखियाँ अधिकतर दोहा छंद में ही मिलती है परन्तु कुछ साखियाँ दोहे के अतिरिक्त चौपाई, श्याम उल्लास, हरिपद, गीता सार में भी मिलती है साहित्यिक दृष्टि से इनमें उच्चकोटि के काव्य के भी दर्शन होते हैं। सभी साखियाँ जीवन की भावात्मक एवं कल्पनात्मक विवेचना से परिपूर्ण हैं, इनमें सच्ची अनुभूति के साथ–साथ काव्य प्रतिभा का कौशल भी विद्यमान है तथा ये साखियाँ उच्चकोटि के व्यग्य से परिपूर्ण होने के कारण ह्रदय पर सीधी चोट करती हैं।

इस तरह गुरु महिमा परमात्मा की सर्वव्यापकता, संसार की नश्वरता, मन की शुद्धि, माया का प्रपंच, मिथ्या आडम्बर का परित्याग आदि का विवेचन करते हुए कबीर ने इन साखियों द्वारा मानव को आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख किया है तथा मोक्ष–साधन के उपाय बताये है।

कबीर की साखियों में मानव को सदाचार एवं शुद्ध आचरण की शिक्षा देती है, इनमें यह समझाया गया है कि मानव को सदैव ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिसमें तनिक अहकार की भावना न हो, अपने मन की शांति के साथ–साथ सुनने वालों को भी सुख प्राप्त हो।

ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोय।

आपन तन सीतल करै औरन को सुख होई।।

कबीरदास जी ने सत्संगति का विशेष महत्व अपनी साखियों के माध्यम से किया है। उन्होंने कहा कि कभी भी जीवन में मुर्ख का साथ नहीं करना चाहिए। कारण मुर्ख व्यक्ति में कभी भी सात्विकता एवं सदाचार के गुणों का समावेश नहीं होता है। जिस प्रकार लोहा कभी भी जल में नहीं तैर सकता वैसे ही अज्ञानी लोहे के समान सदैव भारी रहता है। जीवन में सदैव अच्छे व्यक्तियों के साथ रहना चाहिए क्योंकि उनके सत्संग से जीवन में नवीन ऊर्जा सदविचार व सात्विकता जैसे गुणों को बल मिलता है तथा मनुष्य चरित्रवान व आदर्श बनता है।

उदाहरणार्थ– स्वाति नक्षत्र की एक बूंद केले में गिरकर कपूर बन जाति है और सीप में गिरकर मोती बन जाती है, परन्तु सांप के मुह में गिरने पर हलाहल विष बनती है। वैसे ही सत्संगति से कोई व्यक्ति अच्छा व नेक बनता है तथा कुसंगति से पापी, दुराचारी एवं दुष्ट बनता है। इस साखी में लिखा हुआ है–

कबीर संगति साधु की, कदै न निरफल होई।

चंदन हो सी बांवना, नींव न कहसी होई।।

कबीर ने 'मन' को वश में करने का बहुत जोर दिया है उन्होंने कहा भी है यह मन बड़ा प्रबल होता है यही गोरख है यही गोविंद है और यही औघड़ साधू है कहने का आशय है कि यदि व्यक्ति मन में अच्छे काम करने को ठान ले तो गोविंद भी बन सकता है, सच्चा साधू भी बन सकता है।

मन गोरख मन गोविंदौ, मन ही औघड़ होई।

जे मन राख जतन करि, तो आपै करता सोई ।।

इस प्रकार बाह्य एवं आन्तरिक शुद्धि द्वारा कबीर ने अपनी साखियों में मानव मात्र को सदाचारी बनने एवं शुद्ध आचरण करने की सलाह दी हैं।

अतः कह सकते हैं कि कबीर की साखियाँ वैयक्तिक अनुभूतियों का भण्डार हैं। प्रगल्यता एवं प्रभविष्णुता में बेजोड़ है, सहज स्वाभाविक सौन्दर्य से औतप्रोत है अत्यन्त साधिक है तथा ज्ञान और भक्ति नैतिकता और व्यवहारिकता, दार्शनिकता और भावुकता, आध्यात्मिकता और लौकिकता का समन्वय है। इन साखियों के द्वारा सर्व साधारण को उस सर्व शक्तिमान का परिचय देकर उस शक्ति के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए साधना के अज्ञात एवं अक्षय स्रोतों का द्वार खोल दिया गया है और जन साधारण को एक ऐसा आलोक प्रदान किया गया है, जिससे सभी भूले भटके व्यक्ति, सत्य मार्ग की ओर उन्मुख हो सकते हैं। इसके द्वारा पारस्परिक वैमनस्य को दूर करते हुए मानव मात्र के हृदय में एकता समता तथा सहज प्रेम की भावनाएं जाग्रत की गई हैं। जिससे विश्व बन्धुत्व की भावना को बल मिलता है तथा मानव स्वयं ही मानवता के प्रेम को अपनाने के लिए अग्रसर हुआ है निश्चित रूप से कबीर की ये साखियाँ मानव को आत्म निरीक्षण की ओर उन्मुख करती है शुद्ध आचरण के लिए सभी को बाध्य करती है। सतोष, उदारता, परोपकार सेवा आदि को अपनाने का आग्रह करती है। अच्छे कर्मों की प्रेरणा बुरे कर्मों का त्याग सच्चरित्रता, सामाजिक एकता, भगवद्भक्ति आदि का संचार करती है। इसलिए कबीर की साखियाँ वाणी के अद्भुत सौन्दर्य से ओतप्रोत हैं और इनमें कबीर को सर्वजयी व्यक्तिव विद्यमान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि (लेखक डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सैना)।
2. कबीर वाणी कथ्य और शिल्प (लेखक डॉ० राजकिशोर शर्मा)।
3. कबीर ग्रन्थावली।
4. संस्कार पत्रिका।